an>

Title: Need to provide advanced quality of seeds at cheaper rates to the farmers in the country.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा) : माननीय अध्यक्ष जी, आज मैं सदन में एक बहुत ही गम्भीर और महत्वपूर्ण विषय को सरकार के संज्ञान में लाना चाहता हूं। आज विदेशी बीज उत्पादकों का भारतीय बाजार पर कब्जा होता चला जा रहा है। हमारे किसान विदेशी बीजों पर निर्भर होते जा रहे हैं। यह बाजार करीब 30,000-40,000 करोड़ का है। हमारी मेहनत की विदेशी मुद्रा की जो कमाई फिर से विदेशों में जा रही है। हमारे देश में 40 से अधिक कृषि विश्वविद्यालय हैं और 200 के आसपास एग्रीकल्चर कॉलेज हैं फिर भी हमारे देश के किसान उन्नत किस्म के बीजों के लिए अपने ऊपर निर्भर नहीं हैं। यह गंभीर चिंता और विचार करने योग्य विषय है।

महोदया, आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि विदेशें से आयातित टमाटर के बीज 40,000 रुपए किलोग्राम, गोभी के बीज 26,000 रुपए किलोग्राम से 60,000 रुपए किलोग्राम, पालक के बीज 70,000 रुपए किलोग्राम, खरबूजा के बीज 75,000 रुपए किलोग्राम, मक्का के बीज 5,000 रुपए किलोग्राम और गेहूं के बीज 1,000 रुपए किलोग्राम मिल रहे हैं। अब किसान क्या करेगा? उनकी लागत तो बीज, खाद और पानी में लग जाती है। फसल होते-होते किसी न किसी प्राकृतिक आपदा में नष्ट हो जाती है। उनके पास फिर आत्महत्या के अलावा कोई चारा नहीं बचता है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने घोषणा की थी कि किसानों को लागत मूल्य का डेढ़ गुना लाभांश दिया जाएगा लेकिन अभी तक इस पर अमल नहीं हुआ है। जब तक किसान खुशहाल नहीं होगा तब तक देश की खुशहाली एवं तरक्की सम्भव नहीं है।

अतः मैं सरकार से मांग करता हूं कि देश में ही उन्नत किस्म के बीजों का उत्पादन हो, सस्ते से सस्ते, उन्नत किस्म के सभी प्रकार के बीज किसानों को उपलब्ध हों, इससे ही किसानों को राहत पहुंचा सकते हैं। मुझे आशा है कि सरकार किसानों की इस गंभीर समस्या पर तत्परता से ध्यान देगी।